

## पाठ 6

# ओमना का सफर

ओमना और उसकी पत्नी जहेली बाधा बहुत रुश थीं। वे आथ-आथ द्रेन जे केवल जो जा रही थीं। ओमना जा रही थी अपनी नानी के घर और बाधा अपने परिवार के आध छुट्टियाँ मनाने। ओमना के अपा ही गए थे, दोनों परिवारों के लिए ठिकठ बुक कराने।

सफर जे दो दिन पहले ही बाधा जाइकिल जे गिर गई और उसके द्वायें पैर की हड्डी टूट गई। डॉक्टर ने छह छप्तों के लिए उसकी हाई ठाँग पर पलक्तन चढ़ा दिया और चलने-फिरने के लिए भी मना कर दिया। बाधा के परिवार को अपनी ठिकठें बद करानी पड़ी। बाधा और ओमना बहुत उदास हो गईं। कितनी तैयारी की थी, दोनों ने मिलकर। बाधा की माँ ने एक उपाय जुझाया। उन्होंने ओमना जे कहा, “तुम अपने पूरे सफर की बातें डायरी में लिखती रहना। जब तुम वापिस आओगी, तब बाधा तुम्हारी डायरी पढ़ लेगी। इसके तुम कोई बात भूलोगी नहीं और सफर में तुम्हारा जमय भी अच्छा बीतेगा।”

दोनों जहेलियों को यह बात अच्छी लगी। ओमना ने सफर में अपने आय एक कॉपी बख ली और बाजते की जभी बातें लिखती रही। ओमना की डायरी के कुछ पन्ने तुम भी पढ़ो।



आस-पास

## ओमना की डायरी

16 मई

दोपहर का समय था।  
स्टेशन पर पहुँचते  
ही हमने सबसे पहले अपने नाम  
'रिजर्वेशन चार्ट' में देखे। जल्दी ही ट्रेन  
प्लेटफॉर्म पर आ पहुँची। हमने देखा  
कि ट्रेन तो पहले से ही भरी हुई थी।  
आज सुबह-सुबह ही यह ट्रेन  
गाँधीधाम, कच्छ से चली थी। ट्रेन  
के पहुँचते ही हलचल सी मच गई। एक



ही दरवाजे से कुछ लोग उतर रहे थे, तो कुछ चढ़ने के लिए  
धक्का-मुक्की कर रहे थे।

हम भी जैसे-तैसे चढ़ ही गए और अपनी सीट ढूँढ़कर अपना सामान सीट के नीचे  
रख दिया। ट्रेन के चलने से पहले सभी अपनी-अपनी सीटों पर बैठ चुके थे। कुछ  
देर बाद टिकट-चेकर आया  
और उसने सभी की टिकटें  
देखीं। वह यह देख रहा था  
कि सभी ठीक सीटों पर<sup>1</sup>  
बैठे हैं या नहीं। अम्मा  
और अप्पा को नीचे वाली  
बर्थ मिली, उन्नी और मुझे  
बीच वाली। सबसे ऊपर  
वाली बर्थ पर कॉलेज के



## ओमना का सफर

दो लड़के हैं। पास ही बैठे परिवार के दोनों बच्चे हमारे जितने ही लग रहे हैं। मैं उनसे बात जरूर करूँगी, पर थोड़ी देर बाद।

मैं अब खिड़की के पास बैठी यह सब लिख रही हूँ। अम्मा ने खाने का डिब्बा खोल लिया है। ढोकला, चटनी, नींबू वाले चावल और मिठाई—कितनी सारी चीजें लाई हैं अम्मा! मेरे मुँह में तो पानी आ रहा है। बाकी बातें अब बाद में ही लिखूँगी।

○ ट्रेन के डिब्बे के दरवाजे पर धक्का-मुक्की क्यों हो रही थी?

---

---

○ अगर तुम सफर पर जाओ, तो खाने-पीने का क्या-क्या सामान ले जाना पसंद करोगे? क्यों?

---

---

○ टिकट-चेकर के क्या-क्या काम होते हैं?

---

---

○ तुम टिकट-चेकर को कैसे पहचानोगे?

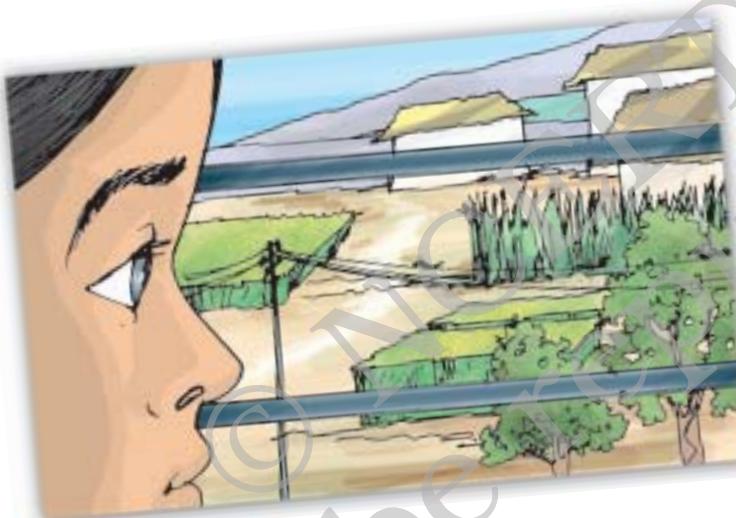
---

---

16 मई



पता है, जब ट्रेन इतनी तेज़ी से चलती है, तो बाहर की सभी चीजें उलटी दिशा में भागती दिखाई देती हैं!



हम अभी-अभी वलसाड़ स्टेशन से निकले हैं। वहाँ ट्रेन दो ही मिनट के लिए रुकी थी। स्टेशन पर खाने-पीने की चीजें बेचने वालों का बहुत शोर था—“चाय! गरम, चाय!”,

दोपहर का खाना खाकर कुछ लोग सो गए, पर मुझे नींद नहीं आई। मैं खिड़की से बाहर देखती रही। यहाँ बाहर सूखे, भूरे मैदान दिखाई पड़े। कहीं-कहीं छोटे-छोटे गाँव भी दिखे। लग रहा था, जैसे सभी भाग रहे हैं।

कुछ समय पहले बहुत गर्मी थी। अब शाम हो गई है और हलकी-हलकी हवा चल रही है।

बाहर आसमान संतरी रंग का दिखाई दे रहा है, सूरज जो डूब रहा है। मैंने अहमदाबाद में कभी डूबते सूरज पर ध्यान ही नहीं दिया!



## ओमना का सफर

एक तरफ से आवाज़ आ रही थी, “बटाटा-बड़ा! बटाटा-बड़ा!, पूरी-साग!”, “दूध! ठंडा, दूध!” लोग प्लेटफॉर्म पर खाने की चीज़ें खरीद और बेच रहे थे। हमने तो खिड़की से ही केले और चीकू खरीद लिए थे।

○ ओमना ने खिड़की से बाहर क्या देखा?

---

---

---

○ रेलवे स्टेशन पर क्या-क्या चीज़ें बिकती हैं?

---

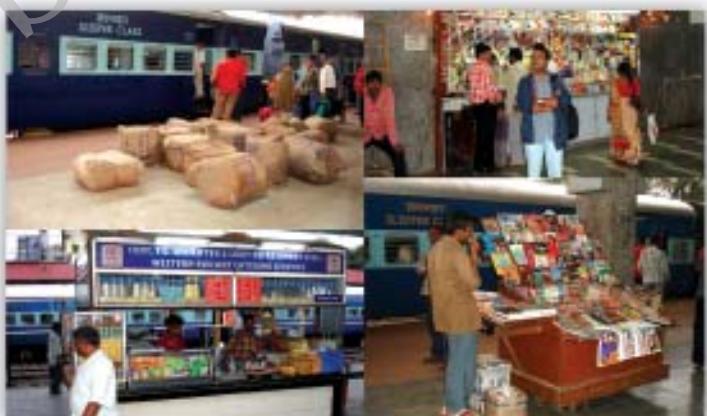
---

---

16 मई



मैं थोड़ी देर पहले बाथरूम में हाथ-मुँह धोने गई थी, पर वहाँ पानी खत्म हो गया था। किसी ने कहा कि अब पानी अगले स्टेशन पर ही भरा जाएगा।



अध्यापक के लिए-गाँधीधाम, अहमदाबाद और वलसाड़ गुजरात में हैं। कोज़ीकोड केरल में है। बच्चों को नक्शे पर गुजरात और केरल दिखाने से उन्हें यह बात समझने में आसानी होगी कि यह सफर बहुत लंबा है।

- ट्रेन के बाथरूम में पानी खत्म क्यों हो गया? चर्चा करो।
- कल्पना करो कि अब तुम्हें ट्रेन में एक लंबे सफ़र पर जाना है। तुम अपने साथ मनोरंजन के लिए क्या-क्या सामान ले जाना चाहोगे?
- चित्रों को पहचान कर लिखो, रेलवे स्टेशन पर ये लोग क्या काम करते हैं? चर्चा करो।

